रीतिकालीन नीतिकाव्य के प्रमुख कवि

डॉ0 आरती,

सहायक प्रोफेसर(हिन्दी विभाग), लाला महोदव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, गोसाईंगंज, लखनऊ।

भक्तिकाल के पश्चात् सत्रहवीं शती के मध्य से लेकर उत्रीसवीं शती के मध्य तक रीतिकाल का समय रहा। इस काल में रीति ग्रन्थों की अधिक रचना हुई। इसीलिए इसे रीतिकाल की संज्ञा दी गई। रीतिकाल का प्रमुख वर्ण्य–विषय श्रृंगार है परंतु इसके अतिरिक्त भी गौड़ प्रवृत्ति के रूप में भक्ति काव्य, वीर काव्य और नीति काव्य के दर्शन भी होते है। यहां हम रीतिकालीन नीतिकवियों का वर्णन करेंगे।

रीतिकालीन नीतिकाव्यों का उद्देश्य प्रभावशाली रूप से लोक कल्याण का विधान करना है। रीतिकालीन नीतिकाव्यों में मंगल की कामना और अमंगल का क्षय करने की स्पष्ट प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है।

डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री 'रसिकेश' के अनुसार ''रीतिकालीन नीतिकाव्य की कृतियां अत्यधिक ऐहिक, आकार में बड़ी या व्यापक तथा विविधतापूर्ण है। इस काल में अनूदित कृतियां तथा नीति पद्यों के संग्रह भी प्राप्त होते हैं।''[1] रीतिकालीन नीति कवियों द्वारा लिखित नीतिपरक रचनाओं के लेखन के आधार पर पांच वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

रीतिकालीन प्रमुख नीति कवियों का वर्गीकरण

रीतिकाल के नीति काव्यकारों को भी पॉच भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम वर्ग में वे काव्यकार हैं जिन्होंने विभिन्न नीति विषयों पर स्वतंत्र मौलिक काव्यों की रचना की है। रसिकेश ने ही मौलिक नैतिक–काव्य–प्रणेताओं का नामोल्लेख इस रूप में किया है–''जिन्होंने जसराज, लक्ष्मीवल्लभ, सुखदेव, हेमराज, भैया भगवतीदास, वृन्द, लक्ष्मी वल्लभ, धर्मसिंह, जिनरंग सूरि, बालचंद, अक्षर अनन्य, देवीदास, केशवदास जैन, गोपाल चानक, रघुराम, किसन, भूधरदास, घाघ, चाचा हितवृन्दावनदास, गिरधर कविराय, विनय भक्ति, योगीराज ज्ञानसार, नाथूराम (नथिया) महाकवि गणपति भारती, स्यामदास, कृपाराम बारहठ, बांकीदास बैताल मनरंग लाल, रघुराम, बुधजन, दीनदयाल गिरि, गुपाल कवि, केसौदास, भड्डरी, मानिकदास, मनराम''[2] आदि प्रमुख नीतिकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नीति का निरूपण किया है।

द्वितीय वर्ग में उन नीति कवियों की गणना की गई है जिन्होंने प्राचीन नीति काव्यों के अनुवाद मात्र किये है। रसिकेश के अनुसार इन कवियों में–''जयसिंह दास, नयनसिंह, कृष्णकवि, द्वारकानाथ सरस्वती(भट्ट) दवीचन्द्र, ब्रजनिधि, चन्दनराम्, उम्मेदराम, बिष्णु गिरि आदि प्रमुख है''[3] इन नीतिकारों ने नीतिग्रन्थों में प्रायः चाणक्य नीति, हितोपदेश, पंचतंत्र, भर्तृहरि कृत नीतिशतक, विदुर नीति आदि में वर्णित नीतियों का आश्रय लिया है।

तृतीय वर्ग में उन नीतिकार कवियों का वर्णन किया गया है जो प्रमुखतः श्रृगांरी कवि है। रसिकेश जी का कहना है। कि ''यदि रीतिकालीन श्रृगांरी कवियों पर दृष्टिपात किया जाये तो इन्हें भी दो भागों मे विभक्त किया जा सकता है। प्रथम मे वे श्रृंगारी कवि जिन्होनें सामान्यतया श्रृंगारिक रचनायें की हैं–सेनापति, बिहारी, धनानन्द, ग्वाल आदि है तथा द्वितीय वर्ग के

अन्तर्गत केशव,मतिराम, देव, भिखारीदास,पद्माकर आदि कवि आते है जिन्होंने आचार्यत्व की दृष्टि से रीतिकव्यों का प्रणयन किया है।''[4]

उन्होंने आगे लिखा है कि **चतुर्थ वर्ग** में उन नीतिकवियों का वर्णन है जिन्होने अपने संग्रहों में विभिन्न कवियों की नीति विषयक सूक्तियों को भी स्थान दिया है। रीतिकालीन मौलिक व अनुवादात्मक रचनाओं या काव्य कृतियों के अलावा नीति ग्रन्थों के संकलन भी किये गये। इन नीति काव्य के संग्रहकर्ताओं के नाम हैं– पंडितराज जगन्नाथ बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय के एक संग्रह में संग्रह संख्या 72/72 क, पत्र 112–130 के अन्तर्गत अनेक कवियों के नीति पद्य संगृहित है जिनमे सेउ और सम्मन मुख्य है–फोर्ट विलियम कॉलेज के प्राध्यापक पं0 लल्लूलाल ने भी नीतिकाव्य का संग्रह संवत् 1870 में किया जो काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित है। इस संग्रह के प्रारम्भिक पन्द्रह दोहे तो भक्ति विषयक है परन्तु बाद में क्रमशः वृन्द, रहीम, रसनिधि आदि के दोहे संगृहीत है तथा सभासंग्रह संख्या 449/326। 'सभाविलास' प्रथम बार तो संग्रहीता के जीवन काल मे और द्वितीय बार 1946 में प्रकाशित हुआ था''[5]।

पंचम वर्ग उन फुटकर नीतिकार कवियों का है जिन्होंने सामान्य नीतिकाव्य या स्फुट नीति पद्यों की रचना की है। इनमें मुख्यतः नीतिकार–''अकमल या अकू, प्रवीण कविराय, महेश मुनि, भरमी कवि, लक्ष्मीवल्लभ गणि उपाध्याय, महाराज जसवन्तसिंह, जगन्नाथ, गडू, प्रस्न पुण्य पाप, प्रेमचन्द्र, अमरसी, भम, नागरीदास, मुनिमान, बारहखड़ी, लालचन्द्र ब्रजवासीदास, उम्मेदराय, श्रीसार, क्षमाकल्याण, रसिक गोविन्द, शिवलाल, दूबे, देवाब्रह्म या देवा पांडे, सूरत,जीवों रीषी, पारषीदास, बणारस, सुन्दरदास, मुरलीदास,गिद्ध या गीध कवि, भगवानदास, निरंजनी, देवमणि'' आदि है[6]।

वस्तुत इन वर्गों में विभक्त नीति कवियों ने अपने–अपने नीतिकाव्य के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों का वर्णन किया है। इन सभी नीतिकार कवियों ने सामाजिक, पारिवारिक, आत्मिक तथा धार्मिक नीति का निरूपण किया है।

अनेक श्रृंगारी कवियों ने धर्म, अध्यात्म आदि का सहारा लेकर स्वतंत्र रूप से ग्रन्थ व स्फुट पदों की रचना की है। रसिकेश की मान्यता है कि 'ऐसा प्रतीत होता है मानों इन कवियों ने भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने के पश्चात्, पश्चाताप के रूप में धर्म और अध्यात्म का सहारा लिया है। इन ग्रन्थों की नीति जहाँ सन्त और भक्त कवियों की नीति से अधिक सादृश्य रखती है वहाँ श्रृंगारिक रचनाओं की नीति का स्वर भिन्न है।''[7]

रीतिकालीन नीतिपरक काव्य रचना करने वाले कवियों की संख्या लगभग तीन दर्जन है। इन कवियों ने जहाँ एक ओर नीति के माध्यम से मद्य, सुरा, मांस भक्षण, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, पापाचार, मिथ्याचार, अनाचार आदि का निषेध किया है वहीं दूसरी ओर विद्या प्राप्ति, सांस्कारिकता, मर्यादा, दान आदि के महत्व पर बल दिया है।

डॉ0 अम्बा प्रसाद सुमन ने इस सम्बन्ध मे लिखा है कि ''हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में नीति काव्य भी एक प्रमुख प्रवृत्ति है। इस काल की नीति विषयक रचनायें पुच्छल तारे की भांति अचानक टूट कर नही आयीं, संस्कृत–काव्यों से इनकी एक परम्परा प्रवाहित हो रही थी। भर्तृहरि ने 'नीतिशतक' (650) नाम से संस्कृत भाषा में नीतिकाव्य की रचना की थी। हेमचन्द्र के अपभ्रंश'–व्याकरण में अनेक दोहे नीति से सम्बन्धित हैं। कबीर, तुलसी, रहीम, जमाल आदि कवियों ने भी नीतिविषयक रचनाएं दोहा छन्द में की है। रीतिकाल में नीतिविषयक काव्य के रचयिताओं में वृन्द, गिरधर कविराय, बैतालें सम्मन, रामसहायदास, दीनदयालगिरि आदि के

नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं। ये नीति–काव्यकार ईसा की अठारहवीं शती से उन्नीसवीं शती तक अपनी रचनाओं की सृष्टि करते रहे।''

निष्कर्ष

नीतिकाव्यों के सृजन की दृष्टि से रीतिकाल का स्थान महत्वपूर्ण है इस काल के नीति कवियों ने नीति विषयक काव्य रचनाएँ धर्म तथा श्रृंगार आदि विषयों के साथ युगीन परिवेश के आधार पर रची है। जिनमें कर्तव्य एवं व्यवहारों का वर्णन है।

सन्दर्भ– ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी में नीतिकाव्य का विकास– डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री–पृष्ठ सं0– क्रमशः–459,460,461,462,463,464,465,467,468,470,509,510,511,512,513,514,515,516,517,518,519,546,547,549,550,557,572,578,579 तक।
2. हिन्दी में नीति काव्य का विकास–डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री 'रसिकेश' – पृष्ठ सं0 क्रमशः–584,585,587,588
3. हिन्दी में नीतिकाव्य का विकास–डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री 'रसिकेश'–पृष्ठ सं0–589
4. हिन्दी में नीति काव्य का विकास–डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री–पृष्ठ सं0–609
5. हिन्दी में नीति काव्य का विकास–डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री–पृष्ठ सं0–611
6. हिन्दी में नीति काव्य का विकास– डॉ0 राम स्वरूप शास्त्री–पृष्ठ सं0–589

Copyright © 2013. *Dr Aarti*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.